إِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا (سورة الأحزاب 56)

सफरे मदीना मुनव्वरा

(ज़ियारत मस्जिदे नबवी व रौज़ए अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी
Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

www.najeebqasmi.com

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ. يَا أَيُّهَا الَّذِينَ
آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا (سورة الأحزاب 36)

सफरे मदीना मुनव्वरा

(ज़ियारत मस्जिदे नबवी
व रौज़ए अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी

www.najeebqasmi.com

सफरे मदीना मुनव्वरा (ज़ियारत मस्जिदे नबवी व रौज़ए अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

Journey to Madinah & Visiting the Masjid of the Prophet and His Holy Grave

By

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब क़ासमी

Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

http://www.najeebqasmi.com/
MNajeeb Qasmi - Facebook
Najeeb Qasmi - YouTube
Skype: najeebqasmi
Whatsapp: 00966508237446

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ़्त मिलने का पताः
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India
डा॰ मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभंल, यूपी, इण्डिया (244302)

विषय-सूची

क्र.	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब क़ासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ क़ासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब	10
5	सफरे मदीना मुनव्वरा	11
6	मदीना तैयबा के फज़ाएल	11
7	मस्जिदे नबवी की ज़ियारत के फज़ाएल	13
8	कब्रे अतहर की ज़ियारत के फज़ाएल	14
9	सफरे मदीना मुनव्वरा	15
10		16
11	दरूद व सलाम	16
12	रियाज़ुल जन्नत	17
13	असहाबे सुफ़्फ़ा का चबूतरा	18
14	जन्नतुल बक़ी (बक़ीउल गरक़द)	18
15	जबले उहद (उहद का पहाड़)	19
16	मस्जिदे क़ुबा	19
17	औरतों के खुसूसी मसाइल	21
18	मदीना से वापसी	21
19	मदीना मनव्वरा के तारीखी मक़ामात	23
20	मस्जिदे नबवी	23
21	हुजरा ए मुबारका	24

22	रियाज़ुल जन्नह	25
23	असहाबे सुफ़्फ़ा का चबूतरा	25
24	जबले उहद (उहद का पहाड़	26
25	मस्जिदे क़ुबा	27
26	मस्जिदे जुमा	27
27	मस्जिदे फतह (मस्जिदे अहज़ाब)	28
28	मस्जिदे क़िबलतैन	28
29	मस्जिद ओबय बिन काब	29
30	लेखक का परिचय	31

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيْم
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْن،وَالصَّلاة وَالسَّلامُ عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيم وَعَلىٰ آله وَاَصْحَابه اَجْمَعِيْن۔

प्रस्तावना

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़बिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क़ियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। क़ुरान व हदीस की रौशनी में उम्मते मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की ज़िम्मेदारी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके क़ुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाऐं। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से इस ज़िम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की क़ुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क़ियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाटस ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूटूयब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में घोड़े दौड़ा दिए हैं ताकि इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताक़तें पुर न कर दें जो इस्लाम और मुस्लमानों के लिए नुक़सानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट (www.najeebqasmi.com) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तक़ाजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए क़ुरान व हदीस की रौशनी में मुख्तसर दीनी पैगाम खुबसूरत इमेज की शकल में मुख्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मक़बूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तक़रीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

इस किताब (सफरे मदीना मुनव्वरा, ज़ियारत मस्जिदे नबवी व रौज़ए अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) में फज़ाईले मदीना मुनव्वरा, मस्जिदे नबवी और क़ब्रे अतहर की ज़्यारत के फज़ाएल, मस्जिदे नबवी में हाज़िर हो कर दरूद व सलाम पढ़ने के तरीके को ज़िक्र किया गया है। नीज़ मदीना मुनव्वरा के तारीखी मक़ामात (मस्जिदे नबवी, हुजरा-ए-मुबारका, रियाज़ुल जन्नत, असहाबे सुफ्फा का चबूतरा, जन्नतुल बक़ी, उहद का पहाड़, मस्जिदे क़ुबा और मस्जिदे

क़िबलतैन) का ज़िक्र भी किया गया है।
अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।
अल्लाह तआला से दुआ करता हूं कि इन सारी खिदमात को क़ुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाल अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी क़िसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जहां की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारूल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल क़ासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारूल हक़ क़ासमी साहब (मेंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरूल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूं कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूं जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हूआ।
मोहम्मद नजीब क़ासमी संभली (रियाज़)
14 मार्च, 2016 ई॰

(Mufti) Abul Qasim Nomani
Mohtamim (VC) Darul Uloom Deoband

مفتی ابو القاسم نعمانی
مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululoom-deoband.com

Ref. No.........   Date:.... ....

باسمہ سبحانہ وتعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبھلی مقیم ریاض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کوزیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہونچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کرکے، دینی کام کرنے والوں کے لیے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔

چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور موبائل ایپ اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہونچا رہے ہیں۔
ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرادیے ہیں، جو الیکٹرونک بک کی شکل میں جلد ہی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔

اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ مزید علمی افادات کی توفیق بخشے۔

ابوالقاسم نعمانی غفرلہ
مہتمم دارالعلوم دیوبند
۱۴۳۷/۶/۳ھ

تاثرات

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات ووسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا اہم تقاضہ ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی فکر رکھنے والے حضرات نے اس سمت میں کام کرنا شروع کردیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے تعلق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء ودعاۃ اسلام بھی اس طرف متوجہ ہورہے ہیں جن میں عزیزم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سرفہرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سا دینی مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی واصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔

ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا قلم رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید ٹکنالوجی سے بخوبی واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم دینی کے ساتھ علوم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، تو دوسری طرف ڈاکٹر ومحقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ فعّال ومتحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی واصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لارہے ہیں، وہ اس کے لئے تحسین اور مبارک باد کے مستحق ہیں۔ ان کی شب وروز کی مصروفیات وجد وجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

مخلص

(مولانا) محمد اسرار الحق قاسمی
ایم. پی. لوک-سبھا (انڈیا)
وصدر آل انڈیا تعلیمی وملی فاؤنڈیشن، نئی دہلی
Email:asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अख़्तरुल वासे
आयुक्त
PROF. AKHTARUL WASEY
Commissioner

भाषाजात अल्पसंख्यकों के आयुक्त
अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय
भारत सरकार
Commissioner for Linguistic Minorities in India
Ministry of Minority Affairs
Government of India

تقریظ

اطلاعاتی انقلاب برپا ہونے کے بعد جس طرح ہر قسم کی معلومات انٹرنیٹ کے ذریعہ آنکھوں کی دو پتلیوں میں سماگئی ہیں۔ اس نے ''گاگر میں ساگر'' اور ''کوزے میں دریا'' کے تخیلاتی تصورات کو نہ صرف حقیقت بنادیا ہے بلکہ ان پر ہمارا انحصار روز بروز ناگزیر ہوتا جارہا ہے۔ گوگل (Google) ہو یا وکی پیڈیا (Wikipaedia) یا پھر دوسری سوشل سائٹس انہوں نے ترسیل وابلاغ کو وہ ہمہ جہت رخ اور رفتار کی تیزی عطا کی ہے کہ فراق وفصل کے تمام تصورات بے معنی ہوکر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اطلاعاتی انقلاب نے ایک پیچیدہ مسئلہ یہ پیدا کردیا ہے کہ اطلاعات رسائی اور خبروں تک رسائی میں حقائق سے گریز یا ان کو مسخ کرنے کا چلن بھی اس طرح شامل ہوگیا ہے اور اس سچائی کو اسلام اور مسلمانوں سے بہتر کون جانتا ہے۔ دوسرا انگیز مسئلہ یہ ہے کہ باخبر ہونے اور معلومات حاصل کرنے کے لئے اب مطالعہ کی عادت لوگوں میں خاصی کم ہوتی جا رہی ہے۔ کیونکہ موبائل کے روپ میں دنیا ان کی مٹھی میں سمائی رہتی ہے اور وہ سب کچھ اسی کے ذریعہ جاننا چاہتے ہیں۔ اس چیلنج اور مسئلے کے حل کے لئے ضروری ہے کہ ہم غلط بیانیوں اور حقائق کو دنیا پر آشکار کرنے کے لئے اور اپنے ہم مذہبوں خاص طور پر نئی نسل کو صحیح معلومات فراہم کرنے، انہیں رہنمائی دینے اور ان کے شعور میں بالیدگی اور پختگی لانے کے لئے اس اطلاعاتی انقلاب کے جتنے بھی وسائل وذرائع ہیں ان کا بھرپور استعمال کریں۔

مجھے خوشی ہے کہ ہمارے ایک موقر اور معتبر عالم حضرت دین مولانا محمد نجیب قاسمی نے جواز ہر ہند دارالعلوم دیوبند کے قابل فخر ابنائے قدیم میں سے ہیں اور عرصہ سے مملکت سعودی عرب کی راجدھانی ریاض میں برسرکار ہیں، انہوں نے اس ضرورت کو بخوبی سمجھا اور دنیا کی پہلی اسلامی موبائیل ایپ ''دین اسلام'' اور ''حج مبرور'' اردو، انگریزی اور ہندی میں تیار کیا تھا اور اب وقت گزرنے کے ساتھ نئے سوالات کی روشنی اور علمی ضرورتوں کے تحت نئے مضامین اور نئے بیانات شامل کرکے ایک دفعہ پھر نئے انداز کے ساتھ پیش کرنے جارہے ہیں۔ مزید برآں زندگی کے مختلف پہلوؤں پر دین کے حوالہ سے دوسو مضامین کے الیکٹرونک ایڈیشن کو بھی منظر عام پر لایا جارہا ہے۔ مجھے وقتاً فوقتاً محترم مولانا محمد نجیب قاسمی صاحب کے مقالے، الیکٹرانک مضامین اور علمی فتوحات سے استفادہ کرنے کا موقعہ ملتا رہا ہے۔ مجھے ان کے متوازن، اعتدال پسند اور عالمانہ انداز تحریر نے ہمیشہ متاثر کیا۔ میں مولانا نجیب قاسمی کی خدمت میں ہدیۂ تبریک وتشکر پیش کرتا ہوں اور خدا سے دعا کرتا ہوں کہ وہ ان کی عمر میں درازی، علم میں اضافہ اور قلم میں مزید پختگی عطا فرمائے۔ کیونکہ:

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں
ابھی عشق کے امتحاں اور بھی ہیں

(پروفیسر اختر الواسع)
سابق ڈائریکٹر: ذاکر حسین انسٹی ٹیوٹ آف اسلامک اسٹڈیز
سابق صدر: شعبہ اسلامک اسٹڈیز جامعہ ملیہ اسلامیہ، نئی دہلی
سابق وائس چیرمین: اردو اکادمی، دہلی

14/11, जाम नगर हाउस, शाहजहाँ रोड, नई दिल्ली–110011
14/11, Jam Nagar House, Shahjahan Road, New Delhi-110011
Tel: (O) 011-23072651-52 Email: wasey27@gmail.com Website: www.nclm.nic.in

सफरे मदीना मुनव्वरा

(ज़ियारत मस्जिदे नबवी व रौज़ए अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

मदीना तैयबा के फज़ाएल

मदीना मुनव्वरा के फज़ाएल व मनाक़िब बेशुमार हैं, अल्लाह और उसके रसूल के नजदीक इसका बुलंद मकाम व मरतबा है। मदीना की फज़ीलत के लिए यही काफी है कि वह तमाम नबियों के सरदार हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दारूल हुजरा और मसकन व मदफन है। इसी पाक व मुबारक सर जमीन से दीन इस्लाम कोने कोने तक फैला। इस शहर को तैबा और ताबा (यानी पाकिजगी का मरकज़) भी कहते हैं। इस में आमाल का सवाब कई गुना बढ़ जाता है। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से मदीना के चंद फज़ाएल पेशे खिदमत हैं।

1) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ करते हुए फरमाय ऐ अल्लाह! मदीना की मोहब्बत हमारे दिलों में मक्का की मोहब्बत से भी बढ़ा दे। (सही बुखारी)

2) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया या अल्लाह! मक्का को तूने जितनी बरकत अता फरमाई है मदीना को इससे दुगुनी बरकत अता फरमा। (सही बुखारी)

3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इरशाद फरमाते हुए सुना जिसने (मदीना के क़याम के दौरान आने वाली) मुशिकलात व

मसाएब पर सब्र किया, क़यामत के रोज उसकी शिफरिश करूंगा या फरमाया मैं उसकी गवाही दूंगा। (सही मुस्लिम)

4) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत का जो भी शख्स मदीना में सख्ती व भूक पर और वहां की तकलीफ व मशक्कत पर सब्र करेगा मैं क़यामत के दिन उसकी शिफाअत करूंगा। (सही मुस्लिम)

5) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मदीना के रास्तों पर फरिश्ते मुक़र्रर हैं इसमें न कभी ताऊन फैल सकता है न दज्जाल दाखिल हो सकता है। (सही बुखारी)

6) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स मदीना में मर सकता है (यानी यहां आा कर मौत तक क़याम कर सकता है) उसे जरूर मदीना में मरना चाहिए क्योंकि मैं उस शख्स के लिए सिफारिश करूंगा जो मदीना में मरेगा। (तिर्मीजी)

7) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया ईमान (क़ुर्बे क़यामत) मदीना में सिमट कर इस तरह वापस आ जाएगा जिस तरह सांप घूम फिर कर अपने बिल में वापस आ जाता है। (सही बुखारी)

8) हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो भी मदीना के रहने के साथ मकर करेगा वह ऐसा घुल जाएगा जैसा कि पानी नमक में घुल जाता है (यानी उसका वजूद बाकी न रहेगा) (सही

बुखारी व मुस्लिम)

9) हज़रत जैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक मौका पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मदीना बुरे लोगों को यूं अलग कर देता है जिस तरह आग चांदी के मैल कुचैल को दूर कर देती है। (सही बुखारी)

मस्जिदे नबवी की ज़ियारत के फज़ाएल

1) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया तीन मसाजिद के अलावा किसी दूसरी मस्जिद का सफर इख्तियार न किया जाए मस्जिदे नबवी, मस्जिदे हराम और मस्जिदे अक़्सा । (सही बुखारी)

2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी इस मस्जिद में नमाज का सवाब दूसरे मसाजिद के मुकाबले में हजार गुना ज्यादा है सिवाए मस्जिदे हराम के। (सही मुस्लिम) इबने माजा की रिवायत में पचास हजार नमाजों के सवाब का ज़िक्र है जिस खुलूस के साथ वहां नमाज पढ़ी जाएगी उसी मुताबिक अजर व सवाब मिलेगा इंशाअल्लाह।

3) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने मेरी इस मस्जिद (यानी मस्जिदे नबवी) में फौत किए बगैर (मुसलसल) चालीस नमाजें अदा कीं उसके लिए आग से छुटकारा, अज़ाब से निजात और निफाक़ से छुटकारा लिखी गई। (तिर्मीजी तिबरानी, मसनद अहमद) बाज़ उलमा ने इस हदीस को ज़ईफ कहा है लेकिन

मुहद्देसीन व उलमा ने सही कहा है लिहाजा मदीना के क़याम के दौरान तमाम नमाजें मस्जिदे नबवी ही में पढ़ने की कोशिश करें क्योंकि एक नमाज का सवाब हजार गुना या इबने माजा की रिवायत के मुताबिक पचास हजार गुना ज्यादा है, नीज़ हदीस में यह मज़कूर फजीलत भी हासिल हो जाएगी। (इंशाअल्लाह)

(वज़ाहत) हुजुर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मस्जिद की ज़ियारत और आप की कब्रे अतहर पर जा कर दरूद व सलाम पढ़ना न हज के वाजिबात में से है न मुस्तहब में से है, बल्कि मस्जिदे नबवी की ज़ियारत और वहां पहुंच कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्रे अतहर पर दरूरद व सलाम पढ़ना हर वक्त मुस्तहब है और बड़ी खुश नसीबी है बल्कि बाज़ उलमा ने अहले वुसअत के लिए वाजिब के करीब लिखा है।

कब्रे अतहर की ज़ियारत के फज़ाएल

1) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स मेरी कब्र के पास खड़े हो कर मुझ पर दरूद व सलाम पढ़ता है मैं उसको खुद सुनता हूँ और जो किसी जगह दरूद पढ़ता है तो उसकी दुनिया व आखिरत की जरूरतें पूरी की जाती हैं और क़यामत के दिन उसका गवाह और उसका सिफारिशी हूँगा। (बैहक़ी)

2) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो शख्स मेरी कब्र के पास आ कर मुझ पर सलाम पढ़े तो अल्लाह तआला मुझ तक पहुंचा देते हैं, मैं उसके सलाम का जवाब देता हूं। (मसनद अहमद, अबूदाउद)

3) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस शख्स ने मेरी कब्र की ज़ियारत की उसके लिए मेरी शिफाअत वाजिब हो गई। (दारे कुतनी, बज्जाज)

4) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो मेरी ज़ियारत को आए और उसके सिवा कोई और नियत उसकी न हो तो मुझ पर हक हो गया कि मैं उसकी शिफाअत करूँ। (तबरानी)

5) हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मदीना आ कर सवाब की नियत से मेरी (कब्र की) ज़ियारत की वह मेरे पड़ोस में होगा और क़यामत के दिन मैं उसका शिफारशी हूँगा। (बैहक़ी)

6) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया या अल्लाह! मेरी कब्र को बुत न बनाना। अल्लाह तआला ने उन लोगों पर लानत फरमाई है जिन्होंने अम्बिया की कब्रों को इबादतगाह बना लिया। (मुसनद अहमद)

सफरे मदीना मुनव्वरा

मदीना मुनव्वरा के पूरे सफर के दौरान कसरत से दरूद शरीफ पढ़ें। अल्लाह तआला फरमाता है बेशक अल्लाह तआला और उसके फरिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान वालों! तुम भी दरूद भेजा करो और खूब सलाम भेजा करो। (सूरह अलअहजाब 56) अल्लाह के रसूल ने इरशाद फरमाया जो शख्स मुझ पर एक मरतबा दरूद भेजता है अल्लाह तआला उसके बदले उस पर दस रहमतें नाजिल फरमाता है

और उसके लिए दस नेकियां लिख देता है। (तिर्मीजी)

मस्जिदे नबवी में हाज़िरी

शहर में दाखिल होने के बाद सामान वगैरह अपनी रिहाईश गाहमें रख कर गूसल या वजू करके मस्जिदे नबवी की तरफ साफ सुथरा लिबास पहन कर अदब व एहतेराम के साथ रवाना हों। दायां कदम अंदर रख कर दखूले मस्जिद की दुआ पढ़ते हुए मस्जिदे नबवी में दाखिल हो जाऐं। मस्जिदे नबवी में दाखिल हो कर सबसे पहले उस हिस्सा में आऐं जो हुजरा-ए-मुबारका और मिम्बर के दरमयान है, जिसके मुअतिल्लक खुद हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमया "यह हिस्सा जन्नत की कियारियों में से एक क्यारी है" और दो रिकात तहयतुल मस्जिद पढ़ें। अगर उस हिस्सा में जगह न मिल सके तो जिस जगह चाहें दो रिकात पढ़ लें। अगर फर्ज नमाज शुरू हो गई है तो फिर जमाअत में शरीक हो जाएं।

दरूद व सलाम

दो रिकात तहयतुल मस्जिद पढ़ कर बड़े अदब व एहतेराम के साथ हुजरा-ए-मुबारका (जहां हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदफून हैं) की तरफ चलें। जब आप सुनहरी जाली के सामने पहुंच जाऐं तो आप को तीन सूराख नजर आऐंगे, पहले और बड़े गोलाई वाले सूराख के सामने आने का मतलब है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्रे अतहर के सामने है, लिहाजा जालियों की तरफ रूख करके अदब से खड़े हो जाऐं, नजरे नीचे रखें और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अजमत व जलाल का

लिहाज करते हुए सलाम पढ़ें।

नमाज में जो दरूद शरीफ पढ़ा जाता है वह भी पढ़ सकते हैं। उसके बाद जालियों में दूसरा सूराख है उसके सामने खड़े हो कर हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु की खिदमत में इस तरह सलाम अर्ज करें।

फिर उसके बाद तीसरे गोल सूराख के सामने खड़े हो कर हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु को इस तरह सलाम अर्ज़ करें।

(वजाहत) बस इसी को सलाम कहते हैं जब भी सलाम अर्ज़ करना हो इसी तरह अर्ज़ किया करें।

(अहम हिदायत) बाज़ औकात भीड़ की वजह से हुजरा-ए-मुबारका के सामने एक मिनट भी खड़े होने का मौका नहीं मिलता। सलाम पेश करने वालों को बस हुजरा-ए-मुबारका के सामने से गुजार दिया जाता है। लिहाजा जब ऐसी सूरत हो और आप लाइन में खड़े हों तो इंतिहाई सुकून और इतमिनान के साथ दरूद शरीफ पढ़ते रहें और हुजरा-ए-मुबारका के सामने पहुंच कर दूसरी जाली में बड़े सूराख के सामने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में चलते चलते मुख्तसर दरूद व सलाम पढ़ें, फिर तीसरे सूराखों के सामने हज़रत अबू बकर सिद्दीक और हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हुमा की खिदमत में चलते चलते सलाम अर्ज़ करें।

रियाज़ुल जन्नत

क़दीम मस्जिदे नबवी में मिम्बर और रोज़ाये अक़दस के दरमयान जो जगह है वह रियाजुल जन्नत कहलाती है. हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है मिम्बर और रोज़ाये अक़दस के दरमयान की जगह जन्नत की कियारियों में से एक

कियारी है. रियाज़ुल जन्नत की पहचान के लिए यहाँ सफेद पत्थर के सतून हैं इन सूतूनों को इस्तिवाना कहते हैं, इस सुतूनो पर इनके नाम भी लिखे हुए हैं, रियाज़ुल जन्नत के पुरे हिस्से में जहाँ सफेद और हरी कालीनों का फर्श है नमाज़ें अदा करना ज़्यादा सवाब का बाईस है, निज कोबूलियते दुआ के लिए भी खास मकाम है-

असहाबे सुफ़्फ़ा का चबूतरा

मस्जिदे नबवी में हुजरा के पीछे एक चबूतरा बना हुआ है यह वह जगह है जहाँ वह मिस्कीन व गरीब सहाबा किराम क़ियाम फरमाते थे जिनका न घर था न दर और जो दिन व रात ज़िक्र व तिलावत करते और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुहबत से फायदा उठाते थे- हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु इसी दरसगाह के मुमताज़ शागिद्रों में हैं। असहाबे सुफ्फा की तादाद कम और ज्यादा होती रहती थीं- कभी कभी उनकी तादाद 80 तक पहुंच जाती थी- सूरह असकहफ कप आयत नं॰ 128 उन्हीं असहाबे सुफ्फा के हक में नाज़िल हुई जिसमें अल्लाह तआला ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके साथ बैठने का हूकुम दिया।

जन्नतुल बक़ी (बक़ीउल गरक़द)

यह मदीना मुनव्वरा का कब्रिस्तान है जो मस्जिदे नबवी से बहुत थोड़े फासले पर है, इसमें बेशुमार सहाबा (तकरीबन 10 हज़ार) और अवलिया अल्लाह मदफून हैं। तीसरे खलीफा हज़रत उसमान गनी रज़ी अल्लाहु अन्हु हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार साहब जादियां हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अजवाज

मुतहहिरात आप के चाचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु भी इसी कब्रिस्तान में मदफून हैं।

जबले उहद (उहद का पहाड़)

मस्जिदे नबवी से तकरीबन 4 या 5 किलो मीटर के दूरी पर यह मुकद्दस पहाड़ है। जिसके मुतअल्लिक हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया (उहद का पहाड़ हम से मोहब्बत रखता है और हम उहद से मोहब्बत रखते हैं) इसी पहाड़ के दामनमें 3 हिजरी में जंगे उहद हुई जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सख्त जख्मी हुए और तकरीबन 70 सहाबा शहीद हुए थे। यह सब शुहदा इसी जगह मदफून हैं जिसका इहाता कर दिया गया है। इसी इहाता के बीच में हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मदफून हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्र के बराबर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु मदफून हैं। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खास इहतिमाम से यहां तशरीफ लाते थे और शुहदा को सलाम व दुआ से नवाजते थे।

मस्जिदे कुबा

मस्जिदे कुबा मस्जिदे नबवी से तकरीबन चार किलो मीटर की दूरी पर है। मुसलमानों की यह सबसे पहली मस्जिद है, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत करके जब मदीना तशरीफ लाए तो कबीला बिन औफ के पास क़याम फरमाया और

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम के साथ खुद अपने दस्ते मुबारक से इस मस्जिद की बुनियाद रखी। इस मस्जिद के मुतअल्लिक अल्लाह तआला फरमाता है (यानी वह मस्जिद जिसकी बुनियाद इखलास व तकवा पर रखी गई है) मस्जिदे हरामए मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अकसा, दुनिया भर की तमाम मसाजिद में सबसे अफजल है। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी सवार हो कर तो कभी पैदल चल कर मस्जिदे कुबा तशरीफ लाया करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है जो शख्स (अपने घर से) निकले और मस्जिदे कुबा में आकर (दो रिकात) नमाज पढ़े तो उसे उमरह के बराबर सवाब मिलेगा।

मदीना तैयीबा के क़याम के दौरान क्या करें?

जब तक मदीना में क़याम रहे उसको बहुत ही गनीमत जानें और जहां तक हो सके अपने औकात को इबादत में लगाने की कोशिश करें। ज्यादा वक्त मस्जिदे नबवी में गुजारें क्योंकि मालूम नहीं कि यह मौका दूबारा मुयस्सर हो या न हो। पांचों वक्त की नमाजें जमाअत के साथ मस्जिदे नबवी में अदा करें क्योंकि मस्जिदे नबवी में एक नमाज का सवाब दूसरे मसाजिद के मुकाबले में एक हजार या पचास हजार गुना ज्यादा है। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कब्रे अतहर पर हाजिर होकर कसरत से सलाम पढ़ें। रियाजुल जन्नत (जन्नत का बागिचा) में जितना मौका मिले नवाफिल पढ़ते रहें और दुआऐं करते रहें। मेहराबुन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और खास खास सतूनों के पास भी नफल नमाज और दुआओं का सिलसिला रखें। फजर या असर की नमाज से फरागत के बाद जन्नतुल बकी चले जाया करें। कभी कभी हस्बे सहूलत मस्जिदे कुबा जा कर दो रिकात नमाज पढ़ आया करें। हुजूर

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की तमाम सुन्नतों पर अमल करने की हर मुमकिन कोशिश करें। तमाम गुनाहों से खुसूसन फजूल बातें और लड़ाई झगड़े से बिल्कुल बचें। खरीद व खरोख्त में अपना ज्यादा वक्त बरबाद न करें क्योंकि मालूम नहीं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस पाक शहर में दोबारह आने की सआदत जिन्दगी में कभी मिले या नहीं।

औरतों के खुसूसी मसाइल

मदीना के लिए किसी तरह का कोई एहराम नहीं बांधा जाता है, इस लिए औरतों मुकम्मल पर्दा के साथ रहें यानी चेहरे पर भी नकाब डालें। अगर किसी औरत को माहवारी आ रही हो तो वह सलाम अर्ज़ करने के लिए मस्जिद नबवी में दाखिल न हों, अलबत्ता मस्जिद के बाहर बाबे जिबरईल या बाबुन निसा या बाबुल बकी के पास खड़े हो कर सलाम अर्ज़ करना चाहें तो कर सकती हैं और जब पाक हो जाएं तो कब्रे अतहर के सामने सलाम अर्ज़ करने के लिए चली जाएं। मस्जिदे नबवी में औरतों को मर्द के हिस्सा में और मर्द को औरतों के हिस्सा में जाने की इजाजत नहीं है इस लिए बाहर निकलने क वक्त और मिलने की जगह पहले मुतअैयन कर लें।

मदीना से वापसी

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शहर (मदीना मुनव्वरा) से वापसी पर यकीनन आपका दिल गमगीन और आंखें अश्कबार होंगी मगर दिल गमगीन को तसल्ली दें कि जिस्मानी दूरी के बावजूद हजारों मील से भी हमारा दरूद अल्लाह के फरिश्तों के

ज़रिया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पहुंचा करेगा। इस मुबारक सफर से वापसी पर इस बात का इरादा करें कि जिन्दगी के जितने दिन बाकी हैं इसमें अल्लाह तआला के अहकाम की खिलाफवरज़ी नहीं करेंगे बल्कि अपने मौला को राज़ी और खुश रखेंगे नीज़ हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीके के मुताबिक ही अपनी ज़िन्दगी के बाकी दिन गुज़ारेंगे और अल्लाह के दीन को अल्लाह के बन्दों तक पहुंचाने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे।

मदीना मनव्वरा के तारीखी मक़ामात

मस्जिदे नबवी

जब हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अहजरी में मस्जिदे क़ुबा की तामीर के बाद सहाबा-ए-किराम के साथ मस्जिदे नबवी की तामीर फ़रमाई, उस वक़्त मस्जिदे नबवी 150 फिट लम्बी और 90 फिट चौड़ी थी- हिजरत के सातवीं साल फत्हे खैबर के बाद नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिदे नबवी की तौसी फ़रमाई- इस तौसी के बाद मस्जिदे नबवी की लम्बाई और चौड़ाई 150 फिट हो गई- हज़रत उमर फारूक (रज़ियल्लाहु अन्हु) के अहदे खिलाफत में मुसलमानो की तादाद में जब गैर मामूली इज़ाफ़ा हो गया और मस्जिद नाकाफी साबित हुई तो 17 हिजरी में मस्जिदे नबवी की तौसी की गई- 29 हिजरी में हज़रत उस्मान गनी (रज़ियल्लाहु अन्हु) के ज़माने में मस्जिदे नबवी की तौसी की गई- उमवी खलीफा वलीद बिन अब्दुल मालिक ने 88 हिजरी से 91 हिजरी में मस्जिद नबवी की गैर मामूली तौसी की- हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रहमतुल्लाह अलैह) उस वक़्त मदीना के गवर्नर थे- उमवी और अब्बासी दौर में मस्जिद नबवी की बहुत सी तौसियात हुईं- तुर्कों ने मस्जिदे नबवी की नए सिरे से तामीर की, उसमे सुर्ख पत्थर का इस्तेमाल किया गया, मज़बूती और खूबसूरती के एतबार से तुर्कों की अकीदतमंदी की नाक़ाबिले फरामोश यादगार आज भी बरक़रार है- हज और उमरह करने वालों और ज़ायरीन की कसरत की वजह से जब यह तौसियात भी नाकाफी रहीं

तो मौजूदा सऊदी हुकूमत ने कुर्ब व जवार की इमारतों को खरीद कर और उन्हें मुन्हदिम करके अज़ीमुश्शान तौसी की जो अब तक सब से बड़ी तौसी मानी जाती है- हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया तीन मसजिद के अलावा किसी दूसरी मस्जिद का सफर इख़्तियार न किया जाये मस्जिदे नबवी, मस्जिदे हराम और मस्जिदे अक़सा- हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मेरी इस मस्जिद में नमाज़ का सवाब दूसरी मसजिद के मुकाबले में हज़ार गुना ज़्यादा है सिवाए मस्जिदे हराम के- दूसरी रिवायत में पचास हज़ार नमाज़ों के सवाब का ज़िक्र है- जिस ख़ुलूस के साथ वहां नमाज़ पढ़ी जाएगी उसी के मुताबिक़ अजर व सवाब मिलेगा इंशाअल्लाह-

हुजरा ए मुबारका

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िन्दगी के आखरी दस ग्यारह साल मदीना में गुज़ारे- 8 हिजरी में फत्हे मक्का के बाद भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसी मुबारक शहर को अपना मस्कन बनाया- आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इंतिक़ाल के बाद हुज़ूर की तालीमात के मुताबिक़ हज़रत आईशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के हुजरे में ही आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दफ़न कर दिया गया, इसी हुजरे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंतिक़ाल भी हुआ था- हज़रत अबु बकर और हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) भी इसी हुजरे में मदफ़ून हैं- इसी हुजरा ए मुबारका के पास खड़े हो कर सलाम पढ़ा जाता है- हुजरा ए मुबारका के क़िबला रुख तीन जालियां हैं जिसमें दूसरी जाली में तीन सुराख़ हैं, पहले और बड़े गोलाई वाले सुराख़ के सामने आने का

मतलब है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्ल्म की क़ब्रे अतहर सामने है- दूसरे सुराख़ के सामने आने का मतलब है कि हज़रत अबु बकर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की क़ब्र सामने है और तीसरे सुराख़ के सामने आने का मतलब है कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) की क़ब्र सामने है-

रियाज़ुल जन्नह

क़दीम मस्जिदे नबवी में मिम्बर और रोज़ए अक़दस के दरमयान जो जगह है वह रियाज़ुल जन्नह कहलाती है- हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है "मिम्बर और रोज़ए अक़दस के दरमयान की जगह जन्नत की कियारियों में से एक कियारी है-" रियाज़ुल जन्नह की पहचान के लिए यहाँ सफेद पत्थर के सुतून हैं- इन सुतूनों को इस्तिवाना कहते हैं, इन सुतूनो पर इनके नाम भी लिखे हुए हैं- रियाज़ुल जन्नह के पूरे हिस्से में जहाँ सफेद और हरी कालीनों का फर्श है नमाज़ अदा करना ज़्यादा सवाब का बाइस है नीज़ क़ुबूलियते दुआ के लिए भी खास मकाम है-

असहाबे सुफ़्फ़ा का चबूतरा

मस्जिदे नबवी में हुजरा के पीछे एक चबूतरा बना हुआ है- यह वह जगह है जहाँ वह मिस्कीन व गरीब सहाबा किराम क़याम फरमाते थे जिनका न घर था न दर, और जो दिन व रात जिक्र व तिलावत करते, और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुहबत से फायदा उठाते थे- हज़रत अबु हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) इसी दरसगाह के मुमताज़ शागिद्रों में हैं। असहाबे सुफ्फा की तादाद कम और

ज्यादा होती रहती थीं, कभी कभी उनकी तादाद 80 तक पहुंच जाती थी, सूरह कहफ आयत नं॰ (128) उन्हीं असहाबे सुफ्फा के हक में नाज़िल हुई, जिसमें अल्लाह तआला ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके साथ बैठने का हुकुम दिया।

जन्नतुल बक़ी (बक़ीउल गरक़द)

यह मदीना मनव्वरा का कर्बिस्तान है जो मस्जिदे नबवी से बहुत थोड़े फासले पर है, इसमें बेशुमार सहाबा (तकरीबन 10 हज़ार) और औलिया अल्लाह मदफून हैं। तीसरे खलीफा हजरत उसमान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चार साहब जादियां, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़वाज मुतहहरात, आप के चचा हजरत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु भी इसी कब्रिस्तान में मदफून हैं।

जबले उहद (उहद का पहाड़)

मस्जिदे नबवी से तकरीबन 4 या 5 किलो मीटर के दूरी पर यह मुकद्दस पहाड़ है। जिसके मुतअल्लिक हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया "उहद का पहाड़ हम से मोहब्बत रखता है और हम उहद से मोहब्बत रखते हैं" इसी पहाड़ के दामन में 3 हिजरी में जंगे उहद हुई जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सख्त जख्मी हुए और तकरीबन 70 सहाबा शहीद हुए थे। यह सब शुहदा इसी जगह मदफून हैं जिसका इहाता कर दिया गया है। इसी इहाता के बीच में हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा हजरत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु मदफून हैं, आप सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की कब्र के बराबर में हजरत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु और हजरत मुसअब बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु मदफून हैं। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खास इहतिमाम से यहां तशरीफ लाते थे और शुहदा को सलाम व दुआ से नवाजते थे।

मस्जिदे क़ुबा

मस्जिदे क़ुबा मस्जिदे नबवी से तकरीबन चार किलो मीटर की दूरी पर है। मुस्लमानों की यह सबसे पहली मस्जिद है, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का से हिजरत करके जब मदीना तशरीफ लाए तो कबीला बिन औफ के पास कियाम फरमाया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम के साथ खुद अपने दस्ते मुबारक से इस मस्जिद की बुनियाद रखी। इस मस्जिद के मुतअल्लिक अल्लाह तआला फरमाता है "यानी वह मस्जिद जिसकी बुनियाद इखलास व तकवा पर रखी गई है" मस्जिदे हराम, मस्जिदे नबवी और मस्जिदे अकसा, दुनिया भर की तमाम मसाजिद में सबसे अफजल है। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी सवार हो कर तो कभी पैदल चल कर मस्जिदे क़ुबा तशरीफ लाया करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है जो शख्स (अपने घर से) निकले और मस्जिदे क़ुबा में आ कर (दो रिकात) नमाज पढ़े तो उसे उमरह के बराबर सवाब मिलेगा।

मस्जिदे जुमा

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सबसे पहले इसी

मस्जिद में जुमा अदा फरमाया था, यह मस्जिदे कुबा के करीब ही बनी है।

मस्जिदे फतह (मस्जिदे अहज़ाब)

यह मस्जिद जबले सिला के गरबी किनारे पर ऊचाई पर बनी हुई थी। गज़वए खंदक (अहजाब) में जब तमाम कुफ्फार मदीना पर मुजतमा हो कर चढ़ आए थे और खंदक खोदी गई थीं, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस जगह दुआ फरमाई थी, चुनांचे आप की दुआ कबूल हुई और मुस्लमानों को फतह हुई। इस मस्जिद के करीब कई छोटी छोटी मस्जिदे बनी हुई थीं जो मस्जिदे सलमान फारसी, मस्जिदे अबु बकर, मस्जिदे उमर और मस्जिदे अली के नाम से मशहूर हैं। दरअसल गज़वए खंदक के मौका पर यह उन हजरात के ठहरने की जगह थे जिनको महफूज और मुतअयन करने के लिए गालिबन सबसे पहले हजरत उमर बिन अब्दुल अजीज ने मसजिद की शकल दी। यह मकाम मसाजिदे खमसा के नाम से मशहूर है। अब सउदी हुकूमत ने इस जगह पर एक बड़ी आलीशान मस्जिद (मस्जिदे खंदक) के नाम से तामीर की है।

मस्जिदे क़िबलतैन

तहवील किबला का हुकुम असर की नमाज में हुआ, एक सहाबी ने असर की नमाज नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ पढ़ी, फिर अंसार की जमाअत पर उनका गुजर हुआ वह अंसार सहाबा (मस्जिदे किबलतैन) में बैतुल मुकद्दस की जानिब नमाज अदा कर रहे थे, उन सहाबी ने अंसार सहाबा को खबर दी कि अल्लाह

तआला ने बैतुल्लाह को दोबारह किबला बना दिया है, इस खबर को सुनते ही सहाबा ए किराम ने नमाज ही की हालत में खाना काबाकी तरफ रूख कर लिया। क्योंकि इस मस्जिद (किबलतैन) में एक नमाज दो किबलों की तरफ अदा की गई इस लिए इसे मस्जिदे किबलतैन कहते हैं। बाज़ रिवायात में है कि तहवीले किबला कि आयत इसी मस्जिद में नमाज पढ़ते वक्त नाज़िल हुई थी।

मस्जिद ओबय बिन काब

यह मस्जिद जन्नतुल बकी के मुत्तसिल है, इस जगह जमाना नबूवत के मशहुर कारी हजरत ओबय बिन काब रजी अल्लाहु अन्हु का मकान था। रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यहां अक्सर तशरीफ लाते और नमाज पढ़ते थे, नीज़ हजरत ओबय बिन काब से कुरान सुनते और सुनाते थे।

लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी का तअल्लुक़ सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में तक़रीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाईं।

डाक्टर नजीब क़ासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिलकी, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवार्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी को "अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी" यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में डाक्टरेट की डिग्री से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहक़ीक़ी मक़ाला

पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी जबानों में तहरीर की है। 1999 से रियाज़(सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअक़िद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उूर्द अख़बारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब क़ासमी की वेब साइट (www.najeebqasmi.com) को काफी मक़बूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (Deen-e-Islam) तीन जबानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौज़ूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक़ खुसूसी ऐप (Hajj-e-Mabroor) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस) की ताईद में ख़ुतूत तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

http://www.najeebqasmi.com/
najeebqasmi@gmail.com
MNajeeb Qasmi - Facebook
Najeeb Qasmi - YouTube
Whatsapp: 00966508237446

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:
Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor

AUTHOR'S BOOKS

IN URDU LANGUAGE:

حج مبرور، مختصر حج مبرور، حی علی الصلاۃ، عمرہ کا طریقہ، تحفۂ رمضان، معلومات قرآن، اصلاحی مضامین جلد ۱،
اصلاحی مضامین جلد ۲، قرآن وحدیث: شریعت کے دو اہم ماخذ، سیرت النبی ﷺ کے چند پہلو،
زکوۃ وصدقات کے مسائل، فیملی مسائل، حقوق انسان اور معاملات، تاریخ کی چند اہم شخصیات، علم وذکر

IN ENGLISH LANGUAGE:

Quran & Hadith - Main Sources of Islamic Ideology
Diverse Aspects of Seerat-un-Nabi
Come to Prayer, Come to Success
Ramadan - A Gift from the Creator
Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat
A Concise Hajj Guide
Hajj & Umrah Guide
How to perform Umrah?
Family Affairs in the Light of Quran & Hadith
Rights of People & their Dealings
Important Persons & Places in the History
An Anthology of Reformative Essays
Knowledge and Remembrance

IN HINDI LANGUAGE:

क़ुरान और हदीस - इस्लामी आइडयिोलॉजी के मैन सोर्स
सीरतुन नबी के मुख्तलफि पहलू
नमाज़ के लिए आओ, सफलता के लिए आओ
रमज़ान - अल्लाह का एक उपहार
ज़कात और सदक़ात के बारे में गाइडेंस
हज और उमराह गाइड
मुख़्तसर हज्जे मबरूर
उमरह का तरीका
पारविारकि मामले कुरान और हदीस की रोशनी में
लोगों के अधकिार और उनके मामलात
महत्वपूर्ण वयक्ति और स्थान
सुधारात्मक निबंध का एक संकलन
इल्म और जिक्र

First Islamic Mobile Apps of the world in 3 languages
(Urdu, Eng.& Hindi) in iPhone & Android by Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

DEEN-E-ISLAM HAJJ-E-MABROOR